जुलाई-सितम्बर, 2017

वर्ष : 18 अं

हिन्दी जगत

विश्व हिन्दी न्यास का त्रैमासिक प्रकाशन

डेन्मार्क की शान : कोपेनहेगेन

□ इला कुमार

डेन्मार्क के लिए हमारे प्लेन की उड़ान अल्ल सुबह शुरू होती है, कुछ ही समय बाद बहुत ऊपर आसमान में खिड़की के पार बादलों पर पड़ती लाल धूप का मोहक दृश्य मन को वाकई मोह लेता है। बादल स्वयं को अलग अलग तरह से प्रदर्शित करते हैं, लेकिन हर बार एक सा दिलकश नजारा। मैं कई फोटो लेती हूँ। आगे हिन्दू कुश पहाड़ों का लम्बा सिलसिला दिखता है, मीलों मील ऊँचे खड़े कद्दावर पहाड़, जिन पर हरियाली का एक कतरा भी नहीं है, मन में प्रश्न उठता है कि सदियों पहले विदेशी आक्रमणकारियों ने न जाने किस बल पर इन हरियाली विहीन पहाड़ों को लांघ होगा...सोने की चिड़िया कहे जाने वाले देश भारत का लालच? हाँ, वही लालच रहा होगा उनका बल!

एकदम सूखी हुई जमीं के सैंकड़ों किलोमीटर पर तने आकाश को लांघकर जब प्लेन मास्को के करीब पहुँचता है, तो हरियाली और जल की उपस्थिति प्रकट होती है और मस्कवा नदी का चौड़ा पाट भी।

रूसी धरती! बचपन में पढ़ी गई कहानियों के पात्रों के बिम्ब मन पर झिलमिलाते हैं—छोटाईवान, जादूगरनी बाबायगा, सुंदरीवासी लिसा और जादुई उकाब, जो जमीन से टकराकर राजकुमार बन जाता जाता था। बचपन में पढ़ी गई कहानियोंके बीच स्थित सशक्त पात्र, जिनके बारे में यहाँ इतने दशकों के फासले पर बैठकर सोचने से लगता है कि कभी-न-कभी सभी से भेंट हुई थी जरूर, बेशक सपनों में ही सही।

मास्को में कुछ घंटों का पड़ाव और अगला प्लेन हमें डेन्मार्क की ओर ले उड़ता है। चार घंटों की हलकी-फुलकी उड़ान के के बाद नीचे समुद्र में चारों ओर अपनी हरियाली से भरी बाँहों को फैलाये डेन्मार्क अपने तटों के संग दीख पड़ता है। कोपेनहेगन के विस्तृत तटों वाले शहर के एअरपोर्ट पर हमारा विमान भरी साँझ में उतरता है। यहाँ की करेंसी क्रोनर है जो डालर से भी महंगा है। एअरपोर्ट से बाहर निकलते ही हलकी बूंदा-बांदी से हमारा सामना होता है, शहर का समा भीगा-भीगा सा है!

अगले दिन अपलैंडगेट से निकलकर हम आमारगब्रो मेट्रो स्टेशन के नजदीक के बस स्टाप से 2ए नंबर बस लेते हैं, नाक की सीध में चलते हुए लाल बस हमें सिटी हॉल स्क्वायर पर उतार कर आगे बढ़ जाती है. शहर के केन्द्र की खुली जगह में हम हरे स्टेच्यू के नीचे जा खड़े होते हैं, जहाँ की खुली जगह में सिटी हाल के सामने कोपेनहेगेन के कन्सर्ट्स, कल्चरल प्रोग्राम चलते ही रहते हैं। मिलने-जुलने के लिए प्रसिद्ध यह जगह हमेशा चहल-पहल से भरी रहती।

कोपेनहेगेन के इतिहास पर नजर डालने से यह दिख पड़ता है कि इस शहर ने स्वयं को ग्यारहवीं शताब्दी के करीब इतिहास के पन्नों पर दर्ज किया, अनेक लोक-कथाओं और किंवदंतियों के बीच समय पर अपनी छाप छोड़ते हुए बारहवीं शताब्दी में बिशप ऐबसलोन का नाम आता है। शहर की परिकल्पना कोपेनहेगेन को बारह सौ चौवन (1254) के आस-पास जैकॉब इन्देंसो (Jacob Eaiandsen) के समय मिली। तेरहवीं शताब्दी में इसके चारों तरफ पत्थर की दीवार खड़ी की गई, यहाँ के राजा के आदेशानुसार पंद्रह सौ छेआँनवे (1596) के आस-पास जर्मन और डच आर्किटेक्ट्स ने शहर में इमारतों को खड़ा करना शुरू किया। मछलियों का व्यापार बहुत पहले से यहाँ था लेकिन सोलह सौ अड़तालीस (1648) के वक्त में कोपेनहेगेन, डेन्मार्क का महत्वपूर्ण पोर्ट बना।

सत्रहवीं शताब्दी में बनीं इमारतों में से कई अभी भी शहर में शान से खड़ीं हैं, जिन पर डेनिस लोगों को गर्व है, और राजपरिवार के अष्टकोणिक आँगन वाले महल पर भी।

अपने खुलेपन, कम भीड़ तथा सकारात्मकता के कारण यह शहर बेहद प्रभावित करता है।

यहाँ के निवासियों को अपनी धरती और अपने आचार से अथाह प्यार है, वे जो हैं! जो थे!—सभी बातों पर उन्हें गर्व है, जिसे वे कुछ इस तरह प्रकट करते हैं - वीआर डेनिश !!

स्टार्क फाऊंटेन नाम से प्रसिद्ध चौक पर हर वक़्त चहल-पहल रहती है, वहीं सामने से लम्बी बोट निकलती है, जिस पर बैठकर टूरिस्ट कोपेनहेगेन की सुंदर जगहों को निहार कर आनन्दित होते हैं, इसी चौराहे से पेडेस्ट्रियन स्ट्रीट की शुरुआत होती है जो कोंगेन्स नैटोर्व (Kongens

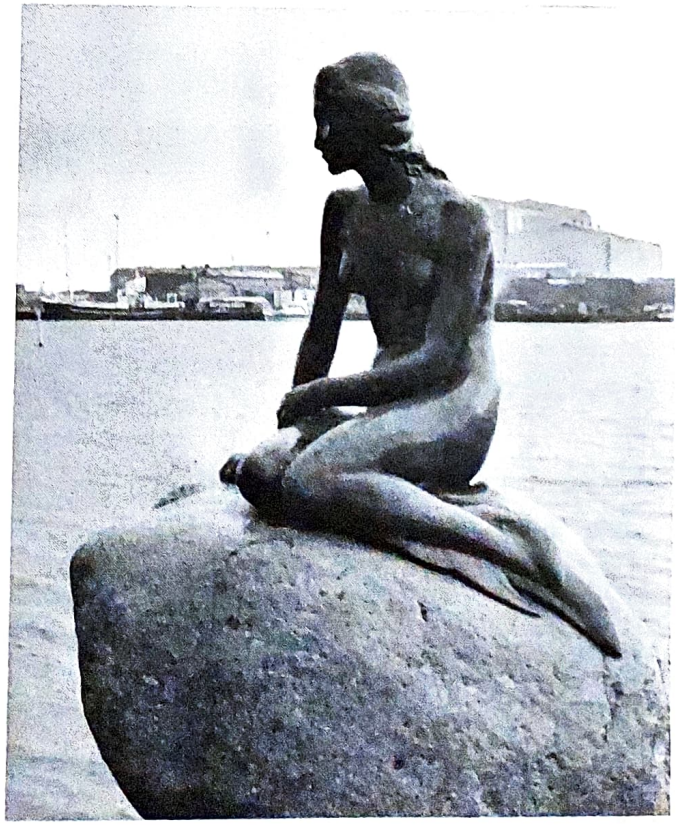

'लिटिल मरमेड' की मूर्ति

डेन्मार्क का विहंगम दृश्य

Nytorv) को जोड़ता है। यह वाकिंग स्ट्रीट बड़ी-बड़ी दुकानों के बीच से गुजरकर सीधी आगे बढ़ती है, इस सड़क पर किसी भी वाहन का चलना वर्जित है, सभी पैदल चलते हैं। इस सड़क पर चलते हुए दोनों ओर रंगीन इमारतें दीखतीं हैं, न्यूहाउन (nyhavn) की यह सड़क अंत में नदी किनारे खत्म होती है, जहाँ पीले रंग का स्टीमर मिलता है जो 'लिटल मरमेड' नामक दर्शनीय स्थल तक जाता है, जहाँ ब्रोंज की यह सुन्दर मूर्ति लगी है।

यहाँ बीच के रास्ते पर चलते हुए एक ओर छोटे-छोटे रेस्त्रां , खुली जगह और शेड के नीचे , बीच में बहती नदी और दूसरी ओर अन्य रंगीन इमारतें—बहुत ही सुंदर नजारा !

वैसे भी पूरे शहर में पैदल चलना, साईकिल पर चलना शान की बात मानी जाती है। साईकिल भी तरह-तरह की—एक बच्चे को पीछे बैठा कर ले जाने वाला स्टैंड तो साधारण सी बनावट है, जो दिखता ही है, लेकिन कई साइकिलों के आगे बड़ी चौकोर बनावट लगी रहती है, जिसमें एक साथ दो बच्चों को, बड़े बच्चे को या पत्नी को भी बैठा कर यहाँ से वहाँ ले जाते हुए लोग दीख पड़ते हैं। इस दृश्य को देखना, उसे मन में संजो लेना एक अनुभव जैसा है—इस देश की सकारात्मक सोच और स्वाबलंबन के प्रतिबिम्बन जैसा है यह। लोग शहर के एक छोर से दूसरे छोर तक पैदल या साईकिल से आते-जाते हैं। बसें भी हैं—लाल, पीली, नीली। 5C बस दुगुनी लम्बी है, बीच में जुड़ी हुई। यहाँ का परिवहन मात्र बस, मेट्रो या लोकल ट्रेन पर निर्भर नहीं है, स्टीमर (जिन्हें मोविया कहते हैं) भी शहर के इस छोर को उस छोर से समान रूप से जोड़ते हैं। स्टीमर और नाव—मोटरबोट वगैरह का लगातार चलायमान रहना पर्यटन का गर्वीला और आकर्षक आयाम जैसा दीखता है।

कोपेनहेगेन में घूमते हुए इस बात की लगातार याद बनी रहती है कि यह एच.सी.एंडरसन का शहर है—बाल कथाओं के जादूगर, लिटल मरमेड और अन्य बाल कथाओं के विश्व प्रसिद्ध कथाकार। अभी भी जल-स्रोत के किनारे उनका बीस नंबर का मकान कितनी ही घटनाओं के साक्षी स्वरुप खड़ा है। लिटल मरमेड की ब्रोंज से बनी मूर्ति की उपस्थिति इस शहर को अलग किस्म की आब देती है ...कभी बीते समय में ...परी सी सुन्दर मत्स्य राजकुमारी, जो जमीनी राजकुमार के प्रति गहन प्रेम में पड़ गयी थी,पर राजकुमार उसे पहचान नहीं पाया था और वह प्रेम कथा असफल रही, लेकिन लिटल मरमेड की याद शहर को अब भी है।

एच.सी.एंडरसन बुलेवार्ड नाम की सडक शहर की व्यस्तम सड़क है। ऊँची बिल्डिंग पर बोर्ड लगा हुआ है—पोलिटि के न हस, जो डेली न्यूज़ पेपर का आफिस है और हाई सिक्यूरिटी एवं हाई एलर्ट वाली बिल्डिंग है। उसके सामने वाली सड़क पर चलते-चलते हम आगे और आगे बढ़ते हैं, खूब आगे चलने पर, एक-दो चौराहे पार करने के बाद थोड़ा बाएं मुड़कर एच.सी.एंडरसन बुलेवार्ड रोड पर आ जाते हैं, फिर पैदल चलते-चलते पुल पार करके सड़क रायल लाइब्रेरी की तरफ बढ़ जाती है।

इसमें कोई संदेह नहीं कि कोपेनहेगेन में विचरते हुए हर वक्त यह महसूस होता है कि यह एक अलग दुनियाँ है, जिसमें अनन्त साफ़-सुथरापन है और नियम पालन का जुनून है, सौन्दर्य है और कर्मठता भी। ❑

सी-1235, गौड़ग्रीन एवेन्यु अभय खण्ड-2
इंदिरापुरम, गाजियाबाद-201014